A–0186

Total Pages : 4 **Roll No. .....**

MASL–602

M.A. Sanskrit (MASL)

(गद्य एवं पद्य काव्य भाग-01)

Examination, June 2025

Time : 2:00 Hrs. Max. Marks : 70

नोट :— यह प्रश्न-पत्र सत्तर (70) अंकों का है, जो दो (02) खण्डों 'क' तथा 'ख' में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है। ***परीक्षार्थी अपने प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त (बी) उत्तर-पुस्तिका जारी नहीं की जायेगी।***

खण्ड–क

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न) 2×19=38

नोट :— खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **दो** (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. दण्डीनः पद लालित्यम् की विस्तृत व्याख्या कीजिए।

2. निम्नलिखित गद्यांश में से किसी **एक** एक का ससंदर्भ व्याख्या कीजिए–

(क) अस्ति समस्तनगरीनिकषायमाणा शश्वदगण्यपण्यविस्तारिता-मणिगणादिवस्तुजातव्याख्यातरत्नाकरमाहात्म्या मगधदेशशेखरी-भूतापुष्पपुरी नाम नगरी/तत्र वीरभटपटलोत्तरंगतुरङ्ग-कुंजरमकरभीषणसकलरिपुगण-कटकनिधिमथनमन्दरायमाणसमुद्दण्डः, पुरन्दरपुराङ्गणवनविहरणपारायणगीर्वाणतरुणगणिकागणजेगीय मानयातिमानया शरदिन्दुकुन्दघनसारनहीहारहारमृणालमरालसुर-गजनीरक्षीरगिरिशाट्टाहासकैलासकाशनीकाशमूर्तया रचितदिगन्त-रालपूर्त्या कीर्त्याभितः सुरभितः, स्वर्लोकशिखरोरुरुचिररत्नाकर-वेलामेर्खेलायितधरणीरमणीसौभाग्यभोगभाग्यवान् अनवरततया-दक्षिणारक्षितशिष्टविशिष्टविद्यासंभारभासुरभूसुरनिकरः, विरचितारातिसंतापेनप्रतापेन सततततुलितवियन्मध्यहंसः राजहंसो नाम घनदर्पसौन्दर्यहृदनिरवद्यरूपो भूपो बभूव।

(ख) लोकैकवीरेण कुमारेण रक्ष्यमाणः संतुष्टान्तरंगों मातांगोऽपिबिलं शशिशेखरकथिताभिज्ञानपरिज्ञातं निःशंक प्रविश्य गृहीतताम्रशासनो रसातलं पथा तेनैवोपेत्य तत्र कस्यचित्पत्तनस्य निकटे केलीकाननकासारस्य विततसारसस्य समीपे नानाविधेनेशशासनविधानोपपादितेन हविषा होमं विरच्य प्रत्यूहपरिहारिणी सविस्मयं विलोकयति राजवाहने

समिदाज्यप्तमुज्जवलिते जवलेन पुण्यगेहं देहं मंत्रपूर्वकमाहुतीकृत्य तडित्समानकान्ति दिव्यां तनुमलभत। तदनु मणिमयमण्डलनमण्डलमण्डिता सकललोकलनाकुललामभूता-कन्यका काचन विनितानेकसखीजनानुगम्यमाना कलहंसगत्या शनैरायगत्यावनिसुरोत्तमाय मणिमेकमुज्जवलाकारमुपायनीकृत्य तेन 'का त्वम्' इति पृष्टा सोत्कण्ठा कलकण्ठस्वनेन मन्दं मन्दमदनजलिरमापत — भूसुरोत्तम, अहमसुरोत्तमनन्दिनी कालिन्दी नाम।

3. संस्कृत वांगमय में दण्डी की रचनाओं का स्थान एवं महत्व प्रतिपादित कीजिए।

4. कवि बाणभट्ट के कर्तृत्व एवं व्यक्तित्व की समीक्षा कीजिए।

अथवा

दशकुमारचरितम् के तृतीय उच्छवास् में वर्णित कथा प्रसंग का वर्णन कीजिए।

5. संस्कृत गद्यकाव्य की परम्परा का विवेचन कीजिए।

खण्ड–ख

(लघु उत्तरीय प्रश्न) 4×8=32

नोट :— खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **चार** (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

निम्नलिखित गद्यांश की ससन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए–

1. अहमपि सबहुमानं मन्त्रिदत्तानि बहुलतुरंगमोपेतं चतुरसारथिं रथं च दृढतरं कवचं मदनुरूपं चापं च विविधबाणपूर्णौ तूणीरद्वयं रणसमुचितान्यायुधानि गृहीत्वा युद्धसनद्धो मदीयबलविश्वासेन रिपूद्धरणद्युक्तं मन्त्रिणमन्वगाम्।

2. मम तुमन्दभाग्यतया बाले वनमातंगेन गृहीते मद्वीतीया परिभ्रमन्ती 'षोडशवर्षानन्तरं भर्तृपुत्रसंगमो भविष्यति' इति सिद्धवाक्यविश्वासादेकस्मिनपुण्याश्रमे तावन्तं समयं नीत्वा शोकमपारं सोढुमक्षमा समुज्जवलिते वैश्वानरे शरीरमाहुतीकर्तमुद्युक्तासीत्' इति।

3. दशकुमारचारितम् की नायिका का चरित्र-चित्रण कीजिए।

4. दशकुमारचारितम् के प्रथम उच्छ्वास का कथासार लिखिए।

5. महाकवि सुबन्धु का परिचय देते हुए उनकी रचना की संक्षिप्त समीक्षा कीजिए।

6. दशकुमारचारितम् में वर्णित यात्रा वृतांत का वर्णन कीजिए।

7. सुबन्धु के कर्तृत्व एवं व्यक्तित्व का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

8. कवि बाणभट्ट का परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का वर्णन कीजिए।

****